मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियो के रहन सहन एवं रीती–रिवाज एक सामान्य अध्ययन

1.डॉ निर्मला डोंगरे 2 डॉ. रश्मि सिंह

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा, मध्यप्रदेश

Email –1- nirmaladongre02@gmail-com 2-rashmi9229@gmail-com

संक्षेपिका

मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीयां पाई जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की प्रमुख पांच जनजाति जिसमें गोंड, भील, कोरकू, बैगा, तथा भारिया जनजाति के सामान्य रहन सहन तथा उनके रीती–रिवाजो के बारे में जानने का प्रयास किया गया है, ये जनजाति दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रो में निवास करती है, तथा इनकी जीविका उपार्जन का प्रमुख साधन कृषि एवं वनोपज है। सामान्यतः सभी जनजातियों का रहन सहन एवं रीति रिवाज लगभग सामान है इन जनजातियों की प्रमुख विशेषता यह है की यह समूह में रहते है एवं संयुक्त परिवार प्रणाली को महत्व देते है।

मुख्य बिन्दू– जनजाति, गोंड ,भील ,कोरकू, बैगा, भारिया , रहन सहन एवं रीती–रिवाज

प्रस्तावना –

जनजाति अथवा आदिवासी समाज ऐसा मानव समूह है, जो विकास के सौपन से सबसे निचले स्तर में है। शब्दकोष के अनुसार जनजाति एक सामाजिक समूह है, जो प्रायः निश्चित भूभाग में निवास करती है। जिसकी अपनी भाषा, बोली, सभ्यता तथा सामाजिक संगठन होता है। सामान्यतः यह मन जाता है, की जनजाति लोग समाज की मुख्या धरा से पृथक जंगलो में निवास करते है।जनजाति में भी अति पिछड़ी जनजाति है जिनमें साक्षरता का निम्न स्तर पाया जाता है।, तथा खेती की पुरातन पद्धति का प्रयोग करते है। साथ ही दूरस्थ एवं दूरगामी क्षेत्रो में निवास करते है इन जनजातियो का संख्या प्रायःस्थिर है या घटती जा रही है। मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीय पाई जाती है। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक जनजाति संख्या अलीराजपुर जिले में है तथा सबसे कम भिंड जिले में पाई जाती है। जनजाति यह सामाजिक समुदाय है, जो राज्य के विकास के पूर्व असितत्व में था, या जो अब भी राज्य से बाहर है। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवाशियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एक संवेधानिक पद है। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति पद का प्रयोग हुआ है। और इसके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की 5 प्रमुख जनजातियो जिसमें गोंड ,भील ,कोरकू ,भारिया तथा बैगा जनजातियो के सामान्य रहन सहन एवं रीती रिवाजो का सूक्ष्म अध्ययन किया गया।

उद्देश्य –

1 मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियो का अध्ययन करना।

2 जनजातियो के रहन सहन एवं रीती– रिवाजो का अध्ययन करना

3 जनजाति के पिछड़े होने के कारणों का अध्ययन करना।

गोंड जनजाति – गोंड मध्यप्रदेश की एक प्रमुख आदिम जनजाति है ।जिसका संबंध प्रक्क द्रविड़ समूह से माना जाता है ।यह जनसँख्या की दृष्टि से भारत की सबसे बड़ी जनजाति है ।गोंड जनजाति मध्यप्रदेश के सभी जिलो में फेली हुई है, लेकिन नर्मदा के दोनों ओर विंध्य और सतपुडा के पहाड़ी क्षेत्रो में इनका अधिक सकेन्द्रण है। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में इनकी जनसँख्या 50.93 लाख है। सर्वाधिक जनसँख्या 6.2 लाख छिंदवाडा में हैं।

गोंड तेलगू भाषा के शब्द कोंण्ड का अपभ्रंश माना जाता है। तेलगू में कोंण्ड शब्द का आर्थ वन आच्छादित पर्वत है। इस प्रकार गोंडो को पर्वतवासी मनुष्य कहा जाता है। अलग–अलग अंचलो में रहने वाले गोंड कई उपशाखाओ के नाम से जाने जाते है। तब भी इनके रहन–सहन में बहुत फर्क होता है। मंडला में गोंड बड़ी किसानी के साथ जुड़े होने के कारण राजगोंड कहलाते है। गोंड राजाओ तथा बड़ादेवकी गाथा गाने वाले परधान गोंड, एक जगह से दूसरी जगह डेरा डालकर नाचने–गाने वाले भिम्मा, धोबा, कोडला, भूता, लोहा गलाने वाले अंगरिया कहलाते है।

शारीरिक विशेषता – रूगोंड जनजाति के लोगो का रंग काला, सिर गोल तथा चेहरे पर कम बाल होते है इनका परिवार पित्रसत्तात्मक होता है। स्त्रियों को आभूषण प्रिय होते है। तथा इनमें गोदने का प्रचलन पाया जाता है।

गोंड घर की दीवारों को स्त्रिया मिटटी तथा रंगों से सजाती है, जीने नाह डोरा कहते है। दीवारों के साथ– साथ नील, गेरू, छुई मिटटी, कालिख आदि से फर्श पर भी ढिग लगाई जाती है, जिसे

ढिगना कहते है। डिंडौरी जिले के एक गाँव पतनगढ़ के परधान गोंड चित्रकार श्री जनगढ़ सिंह को चित्रों की एक खास शैली विकसित करने का श्रेय जाता है, जिसने इस समुदाय को विश्व के कला के नक्शे में एक खास पहचान दिलाई है। आज इस शैली में सौ से भी अधिक चित्रकार काम करते है इस चित्रशैली की मूल प्रेरणा गोंड स्त्रियों द्वारा बनाये जाने वाले भित्ति चित्रांकन ही है।

विवाह–गोंडो में पलायन विवाह को लमझाना कहा जाता है। सेवा विवाहको लमनाई कहा जाता है। रीती रिवाज गोंड समुदाय कथाओ, मुहावरों, पहेलियो के साथ –साथ नृत्य गीत का भी अत्यंत शौकीन होता है। करमा, शैला, रीना, गिरधा, ददरिया, सूआ इनके प्रमुख गीत है। जिन्हें स्वांग. गम्मत या तमाशा कहते है। ऋतू चक्र से जुड़े त्यौहार बिदरी पूजा, हरढीली, नवाखानी, जवारा मढई, छेरता बकबन्धी आदि यह समुदाय बड़े उत्साह और नृत्य गान के साथ मनाता है।

भील जनजाति – भील भारत की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है, तथा जनसँख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है। जनगणना के अनुसार राज्य में भीलो की जनसँख्या 59.9 लाख है। मध्यप्रदेश में ये लोग मुख्यतः झाबुआ, थांदला, पेटलावद, अलीराजपुर, जोबट, नारकुण्डी, बाग, छोटा उदयपुर, धार, बडवानी, खरगोन, तलोद, शाहदा, सिरपुर, अमझोरा, एवं रतलाम क्षेत्र में आते है।

शारीरिक विशेषता–भीलो का कद नाटा ,रंग गेहुआ तथा नाक चपटी होती है। चेहरा चौड़ा और बाल घुघराले होते है। शरीर छोटा पतला लेकिन सुगठित होता है। भीलो के घर एक–दुसरे से अनिश्चित दूरी पर बने होते है,जिन्हें फल्या कहते है। इनके गाँव पाल तथा खेती चिमाता कहलाती है। भील शब्द संभवतः द्रविड़ भाषा में धनुष के लिए प्रयुक्त होने वाले 'बील' शब्द से आया है। संस्कृत की एक उक्ति है। 'भिदन्तिइति भिल्हः' यानि भील वह है, जो भेदन करता है। भील अच्छे निशानेबाज होते है। तीर–कमान तथा गोफन अपने साथ रखना पसंद करते है। युवा भील छोटी नदी या पोखर में मछली तक तीर–धनुष से मारते है। भिलाला, पटलिया, बारेला ,पुजारो और राठया भील जनजाति की प्रमुख उपशाखायें है ।भील एक ऐसी प्राचीन जनजाति है। जिनका जिक्र कई पौराणिक आख्यानो में मिलता है। और जहाँ वे निषाद नाम से उल्लेखित किये गये है। भील वाल्मीकि और एकलव्य को अपना पूर्वज मानते है। भीली भाषा में राजस्थानी, मालवी, गुजरती के शब्द आते है। इनकी मौखिक आख्यान परम्परा बहुत समृद्ध है।

भीलो के प्रमुख देवता राजपंथा है। तथा वे हिन्दुओ के सभी देवी देवताओ को मानते है। भील पूर्वज देवता पिठोरा कुंवर, बाबो इंद, जातु बाई को अनुष्ठान पूर्वक दो–तीन साल में एक बार पूजते है। भील गाँव में बापदेव, भिलट देव, भेरू भील माता, काली माता, खेडो माई आदी के स्थान होते है।

विवाह –भीलो का प्रमुख त्यौहार भगोरिया होता है। फागुन माह झबूआ में मनाया जाता है। इसमें वधु मूल्य प्रथा का सर्वाधिक प्रचलन पाया जाता है। इसके आलावा परीक्षा विवाह की प्रथा गोलगधेदो का प्रचलन भी है।

रीती–रिवाज –सूखी बंजर धरती के रंगों के आभाव को दूर करने के लिए ही जेसे भील स्त्री–पुरुष चटक रंगों की वेशभूषा पहनते है। भील नृत्य–गीत में रूचि लेने वाला उत्सव धर्मी समाज है। भीली, भगोरिया, बडवा, घूमर गौरी आदि इनके प्रमुख नृत्य है। भीलो में अपने पूर्वजो के लिए पत्थर या लकड़ी और अब सीमेंट में गातले या मृतक स्तम्भ बनाने का रिवाज है। ये गातले या तो समुदाय के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए बनाये जाते है। अथवा उस व्यक्ति के लिए जिसकी म्रत्यु सांप के काटने, जंगली जानवर द्वारा मारे जाने या दुर्घटना आदी में होती है। गातले पर सूरज–चाँद, घुड़सवार, मृतक, पनिहारिन आदी के अलावा मृतक के जीवन से जुडी किन्ही खास चीजो को भी अंकित किया जाता है। भील लोगो के कला बोध की झलक उनकी घर की दीवार पर स्त्रियों द्वारा बनाये जाने वाले चित्रों, अनुष्ठानिक पिठोरा चित्रांकन, गातले, उनके परिधान, आभूषण, नृत्य–गान तथा दैन्दिनीउपयोग की वस्तुओ में स्पष्ट देखने मिलती है।

कोरकू जनजाति –कोरकू जनजाति मुंडा या कोल समूह की जनजाति है। मध्यप्रदेश में कोरकू जनजाति की कुल जनसँख्या 7.31 लाख है। सतपुडा के मध्य भाग में कोरकू जनजाति का अधिक सकेन्द्रण है, जिनमें छिंदवाडा, बैतूल, होशंगाबाद हरदा और खण्डवा, जिले प्रमुख है। कोरकू जनजाति में दो वर्ग पाये जाते है। राजकोरकू तथा पठारीय। राजकोरकू भूमि के स्वामी होते है। तथा सामाजिक दृष्टि से उच्च श्रेणी के माने जाते है।

शारीरिक विशेषता – कोरकू जनजाति के लोगो का रंग काला, नाक चपटी होट मोटे और चेहरा गोल होता है।

आमने–सामने दो कतारों में बने कोरकू घर और उनके गेरू, खड़िया व् पीली मिट्टी से सजे ओटले कोरकू समाज को खास पहचान देते है। कोरकू स्त्रियाँ गोदने की शौकीन होती है। माथे पर अंग्रेजी के अक्षर के ऊपर–नीचे दो बिन्दु को कपार गोडईकहते है। आदिवासी गोदने के आकारों में बिंदु अक्सर अन्न का या अग्नि का घोतक होता है। यह एक प्रकार का श्रंगार है मान्यता है की यह रोग मुक्त व बलशाली रखते है।

विवाह – प्रमुख विवाह प्रकार घर दामाद, लमझना, राजी–बजी प्रथा तलाक एवं विधवा विवाह,

रिवाज – देवदशहरा,माघ दशहरा, जिरोती, आखातीज और मेघनाद पूजन आदी इनके प्रमुख पर्व है। कोरकू समाज टोटम आधारित समाज है इनमें म्रत्यु के बाद गाड़ने की परम्परा है। इनमें सिडोली प्रथा पाई जाती है, जिसमे लकड़ी के मृतक स्तम्भ बनाते है जिसे मुंडा कहा जाता है। मुंडा बनाने व् लगाये जाने के अनुष्ठान को ही सिन्डोली कहते है। कोरकू मृतकों को पितर और देवता की तरह मानता है।

बैगा जनजाति – बैगा समुदाय को आदिम जनजाति को कोटि में रखा गया है। क्योकि इनके रहन–सहन, मान्यताओ आदि में तुलनात्मक रूप से कम बदलाव आये है। मध्यप्रदेश में बैगा जनजाति की जनसँख्या 4.15 लाख है। बैगा मुख्यरूप से मध्यप्रदेश के मंडला, डिंडोरी है, शहडोल, उमरिया, बलाघाट और अमरकंटक के वन आच्छादित क्षेत्रो तथा पहाड़ी अंचलो में रहते हैं। बैगा अपने को धरती का सेवक और जंगल का राजा मानते है। बैगाओ के जीवन के विविध पक्ष जंगल से जुड़े हुए और उस पर आश्रित है। जन्म, विवाह, मृत्यु संस्कारो में भी वे सामग्री समाहित है, जो जंगल से ही प्राप्त होती है।

शारीरिक विशेषताए – बैगाओ का रंग काला, नाक चपटी तथा त्वचा सूखी होती है।

बैगाओ के पांच मुख्य गौत्र है और वे हर गोत्र से जुड़ा एक गढ़ या पवित्र स्थल तथा गोत्र चिन्ह मानते है। बैगा गौत्र या वंश को जात कहते है। बैगा समुदाय की सामजिक संरचना बड़ी व्यवस्थित और सुचारू रूप से काम करने वाली है। मुकद्दम, दीवान, समरथ ,कोटवार और दवार इन पांचो से बनी पंचायत को तमाम विवाद आदि सुलझाने का अधिकार होता है। मुकद्दम गाँव का मुखिया तथा दवार पुरोहित होता है। बैगाओ का सोंदार्य बोध बहुत ही खास होता है। बैगा स्त्रियों को गोदने का इतना शोंक होता है की वे बहुत मोटे तथा विस्तृत गोदने गुद्वाती है। बैगनी, करमा, सैला, बिलमा, परधोनी, फाग, झरपट आदि इनके प्रमुख नृत्य है।

विवाह –मंगनी विवाह, उठवा विवाह, चोर विवाह, पेठुल विवाह लमसेना, उधरिया विवाह आदि इनके विवाह के प्रमुख प्रकार है।

रीति रिवाज – बैगाओ के प्रमुख देवता बूढा देव है ,जो शाज के वृक्ष में निवास करते है।भूमि के देवता ठाकुर देव है। और ऐ बीमारियों से सुरक्षा के लिए दूल्हादेव की पूजा करते है। बैगा जनजाति जादू टोना में विश्वास करती है।

भारिया जनजाति – भारिया जनजाति मध्यप्रदेश में मुख्यतरू जबलपुर और छिंदवाडा में है छिंदवाडा में ये तामिया विकासखंड के पातालकोट क्षेत्र में रहते है। भारिया द्रविड़ियन समूह के है, तथा विद्वानोने इन्हें भूमिया जाती के अंतर्गत रखा है। भारिया स्वम् को गोंडो का छोटा भाई कहते है। मध्यप्रदेश में भारिया जनजाति की जनसँख्या लगभग 2.5 लाख है ।

शारीरिक बनावट – भारिया लोगो का कद माध्यम, रंग काला, आँखे छोटी और नाक चौड़ी होती है। भारिया जनजाति की स्त्रियों को गुदना गुदवाने का शोंक होता है।

भारिया शिकार करने और मछली पकड़ने के शौकीन होते है भारिया खेत खलियानों में मजदूरी करते है। लघु वन उपज एवं जड़ी–बूटियों का संग्रह इनका दूसरा आर्थिक स्त्रोत है। वे लोग बाँस की टोकरिय ,सूपे ,डलिया ,छिंद पत्तो तथा देवबहारी घास की झाड़ू बनाने के अलावा लकड़ी के दरवाजे ,चौखट बैलगाड़ी आदि बनाने का काम भी करते है।

विवाह –विवाह के अवसर पर खजूर के पत्तो से बनाये जाने वाले मुकुट दूल्हा–दुल्हन को पहनाकर विवाह किया जाता है।

रीती रिवाज– भड़म, सैतम, सैला, करमा, सूआ, अहिरई आदि भारियाओ के प्रमुख नृत्य है। बूढादेव दूल्हा देव और नाग देव भारिया जनजाति के देवता है। विदरी पूजा, नवाखनी, जवारा, होली,

दिवाली त्यौहार है। भारिया मृतक के लिए एक मिटटी का गोल चबूतरा बनाकर पत्थर रख मंडप बनाकर अनुष्ठान करते है ? तथा ए इसे व्यक्ति का बड़ा विवाह कहते है।

समस्याए –

1 जनजाति की मुख्य समस्या भूमि से अलग होना है।

2 संरक्षित वनों, रास्ट्रीय पार्को की अवधारणा ने जनजातियो में अपनी सांस्कृतिक जड़ो से काटने का भाव उत्पन्न किया और वे अपनी आजीविका के सुरक्षित साधनों से वंचित होते गए।

4 दुर्गम निवास यह एक प्रमुख समस्या है जिससे अवागमन में असुविधा होती है।

5 संचार साधनों का आभाव होने के कारण मुख्यधारा से जुड़ने में कट जाती है।

6 अशिक्षा जनजाति समूह के विकास में प्रमुख बाधा है।

सुझाव –

1 जनजाति को आजीविका के लिए जनजाति उत्पादों के विकास तथा विपणन हेतु संस्थागत समर्थन की योजना शासन द्वारा बनाई गयी है। जिसका उपयोग किया जाना चाहिए।

2 जनजातियो के रीती–रिवाजो को संरक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ी उनके सकारात्मक प्रेरणा ले सके।

उपसंहार –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति का सामान्य आध्ययन किया गया है। जिसमें गोंड, भील, कोरकू, बैगा और भारिया जनजाति को लिया गया है। अध्ययन में पाया गया की सभी जनजाति की विवाह, रीती–रिवाज संस्कार, नृत्य, श्रंगार शैली में थोडा बहुत अंतर पाया जाता है पर समस्या लगभग एक जेसी ही है। जनजाति के लोग अपने मूल व्यवसाय या कार्य के पलायन कर रहे है। अभी भी मुख्याधारा से वंचित है साक्षरता का स्तर निम्न है। यदपि सरकार द्वारा इन जनजातियो के लिए विभिन्न योजनाये बनायीं गयी है। लेकिन बहुत कम लोगो के पास इनकी पहुच है। जिसका मुख्य कारण जागरूकता की कमी है इन जनजातियो को आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक द्रष्टिसे और मजबूत करने की आवश्यकता है। इन जनजाति को और समृद्ध करने से समाज और देश मजबूत होगा इनके द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से लोग अवगत होंगे, आने वाली पीढ़िया इनके अनुभव और रीती रिवाजो से जान पायेगी की क्यों ऐ लोग वृक्ष में देवता का वास मानते है। जंगल के प्रति प्रेम और समर्पण भावना तथा प्रकृति को सहेज ने की कला इन जनजातियो से सीखने को मिलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.मध्यप्रदेश जनजातिय संग्रहालयय आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् यश्यामला हिल्स भोपाल

2.आदिवासी लोक कथाएं (1989) प्रकाशन गोंडी पब्लिक ट्रस्ट, मंडला, मध्यप्रदेश

3.इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

4-https://www-mpgkpdfcom/2020/02/mp&ki&janjati&evam&kala-html